भीष्म साहनी के साहित्य में व्यक्त राजनैतिक चेतना

डॉ. निलेश के. पटेल

१. प्रस्तावना

उपन्यासकार भीष्म साहनी जी के उपन्यासों में राजनीतिक व्यवस्था का विस्तृत रूप प्रकट होता है। इनके राजनीतिक उपन्यास 'तमस', 'मय्यादास की माड़ी' और 'कुंतो' है। जब हम सूक्ष्म दृष्टि से देखते है, तो 'तमस' एकमात्र उपन्यास में राजनीतिक उपन्यासों की श्रेणी में रखा जा सकता है। इस उपन्यासों में राजनीतिक स्वर प्रधान रूप में मुखरित हो उठा है। पंजाब के सीमावर्ती प्रदेश में धर्म के नाम पर सांप्रदायिक लड़ाइयाँ हो रही थीं। 'तमस' में देश विभाजन के पूर्व की स्थिति की भयानक करूण घटनाओं का जीवंत चित्रण भीष्म साहनी जी के मस्तिष्क की अदभुत एवं सुंदर उपज है। तमस की इस खौफनाक कथा को अपनी सुंदर भाषा द्वारा भीष्म जी ने अपने अंदर तपकर पक रही भयानक घटनाओं को उगल दिया है। यह उनकी कल्पना एवं प्रामाणिकता की उपज ही है क्योंकि भीष्म जी उन सांप्रदायिकता की त्रासदी के दर्द को छब्बीस वर्ष की एक लम्बी अविध के पश्चात 'तमस' के रूप में उन खौफनाक घटनाओं को बड़े मार्मिक ढंग से किया करते है। अंग्रेजों ने आपस में फूट डालने के लिए, हिंदुस्तानियों की धार्मिकता एवं अनैक्य की कमजोरियों का अध्ययन करके हिंदुस्तानिययों के प्रति धर्म को अपना हथियार बनाकर आपस में लड़ाई करवाई और हिंदुस्तानियों के प्रति कूट नीति को अपनाया दोगली- राजनीति को अपनाया और हिंदुस्तानियों का अनैक्य और कौमी कमजोरियों को बखूबी जान लिया था। इन्हीं कमजोरियों के सहारे अंग्रेजों ने भारतीयों में कूट नीति को अपनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर लिया था।

२. राजनैतिक चेतना

भीष्म साहनी जी ने अपने उपन्यासों में राजनैतिक चेतना व्यक्त की है जैसे कि - आप सोचिए कि मात्र फसाद होने की अफवाह से लोग इतने डर गये हैं तो खौफनाक फसादी दंगे से मनुष्य की क्या गति हो सकती है? हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह खौफनाक दृश्य कितना बीभत्स और कितने निरपराध होगा। शिकार होंगे। "सुना है कि एक गाय भी काटी गयी है। माई सत्तो की धर्मशाला के बाहर उसके अंग फैं के गये है। गो-वध हुआ तो यहाँ खून की नदियाँ बह जाएँगी । सबसे पहले अपनी रक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिए। सभी सदस्य अपने- अपने घर में एक-एक कनस्तर कड़वे तेल को रखें, एक-एक बोरी कच्चा या पक्का कोयला रखा है। उबलता तेल शत्रु पर डाला जा सकता है, जलते अंगारे छत से फैंके जा सकते है।

मुहल्लों के बीच लीकें खिंची गयी थीं, हिंदुओं के मुहल्ले में मुसलमान को जाने की अब हिंम्मत नहीं थी और मुसलमानों के मुहल्ले में हिंदू-िसखों अब नहीं आ-जा सकते थे। आँखों में संशय और भय के भाव उतर आये थे। गलियों के सिरों पर और सड़को के नाकों पर जगह-जगह कुछ लोग हाथ में लाठियाँ और भाले लिए और मुश्के बाँधे, छिपे बैठे थे। जहाँ कहीं हिंदू और मुसलमान पड़ोसी एक-दूसरे के पास खड़े थे, बार-बार एक ही वाक्य दोहरा रहे थे बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा हुआ। इससे आगे वार्तालाप बढ़ ही नहीं पाता था। वातावरण में जड़ता सी आ गयी थी। सभी लोग मन-ही-मन जानते थे कि यह कांड यहीं पर खत्म होने वाला

नहीं है, लेकिन आगे क्या होगा, किसी को मालूम नहीं था। स्थिति में पहले से कहीं अधिक उग्रता आ गयी थी। सड़के सूनी पड़ी थीं, न कोई दुकान खुली थी, न कहीं कोई ताँगा-मोटर चल रही थी। अगर किसी दुकान की किवाड़ खुली हो, तो समझ लो, लूट ली गयी है। अगर लाठियाँ लिए कुछ लोग खड़े हों तो समझ लो उन्हीं के समुदाय के लोगों का वह मुहल्ला है और जहाँ वे खड़े हैं, वहाँ से दूसरे समुदाय के लोगों का मुहल्ला शुरू हो जाता है। पर सभी मुहल्ले बँटे हुए नहीं थे। सड़क के किनारे-किनारे के, या देवदत्त की शब्दावली में, सड़कों पर खुलने वाले मकान मध्यवर्ग के गलियों में खुलने वाले मकान निम्न वर्ग के लोगों के थे। खून का बदला खून से लेंगे। बोल सरदार, इस्लाम कबूल करेगा या नहीं? अगर मंजूर है तो अपने-आप बाहर आ जा, हम तुम्हें कुछ नहीं करेंगे वरना ढेले मार-मारकर मार डालेंगे। अंत में कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ता बख्शी जी बौखलाकर अंग्रेजों की पोल खोलते हुए कहते हैं कि "फसाद करनेवाला भी अंग्रेज, फसाद रोकने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज ही है पर जब से फसाद शुरू हुए थी, बख्शी जी के दिमाग में धूल सी उड़ने लगी थी, बस केवल इतना भर ही बार-बार कहते रहे, अंग्रेज फिर बाजी ले गया । अंग्रेज फिर बाजी ले गया। जो बात हाकिम देख सकता है, वह आम लोग, तुम और हम नहीं देख सकते। अंग्रेज हाकिम की आँखें चारों तरफ देखती है, वरना क्या यह मुमकिन है कि मुट्ठी-भर फिरंगी सात समंदर पार से आकर इतने बड़े मुल्क पर हुकूमत करें? अंग्रेज बहुत दानिशमंद हैं, दूर अन्देश हैं।

भीष्म जी ने बड़ी कुशलता से अंग्रेजी प्रशासन की गुत्थियाँ खोली है। धर्म और राजनीति के सहारे कूटनीति को अपनाते हुए, अंग्रेज शासकों को फूट डालने की प्रवृत्ति धर्म के नाम पर उत्पन सांप्रदायिक उपद्रवों को उजागर करती है। राजनीति के वातावरण को पर्याप्त मात्रा में भीष्म जी 'तमस' में दर्शाते हैं। उपन्यास की कथा-भूमि में एक तथ्य उभरता हुआ नजर आता है कि दंगे के दिनों में कम्युनिष्टों ने और कांग्रेस कमेटी वालों ने फसादों को रोकने की भरसक कोशिश की है, उनके ये प्रयास शहर से लेकर गाँवों तक भी जारी रहे। भरसक कोशिशों के उपरांत कम्युनिष्ट और कांग्रेस कमेटी वाले फिसाद को रोक पाये, हजारों मासूमों, निरपराधों को मौत के घाट उतार दिया गया था। हजारों लोग अनाथ हुए थे।

भीष्म जी के उपन्यास 'मय्यादास की माड़ी' की कथा-भूमि में भी राजनीतिक वातावरण को दर्शाया गया है। अंग्रेज यहाँ पर भी कूटनीति के अनुसार सिक्ख अमलदारों को अपने कब्जे में करते हैं। समय का फायदा उठाकर अंग्रेजों ने सिक्खों की खालसा फौज के सेनापतियों को खरीद लिया था। "सिक्ख सेना के दोनों अफसर, लालसिंह और तेजसिंह, अंदर-ही-अंदर फिरंगियों से मिले हुए थे। बार-बार सुनने में आ रहा था कि मुदकी की लड़ाई में सरदार लालसिंह जंग के मैदान में से जान-बूझकर सरक गया था। जब शाम के साये उतरने लगे थे, तो वह किसी दूसरे मोर्चों का संचालन करने नहीं गया था, वह युद्ध के खतरे से भी अपनी जान बचाने के लिए नहीं भागा था। वह सरक गया था, क्योंक उसने अपना काम पूरा कर दिया था, फिरंगी लाट को दिया वचन निभा दिया था। सिक्ख सेना का पराजय को सुनिश्चित कर दिया था।" इस प्रकार लालसिंह और तेजसिंह को अंग्रेजों ने खरीद लिया था। दोनों उनके गुलाम बन गये थे। इसीलिए खालसा की

सत्ता अंग्रेजों की कूट-राजनीति के फल स्वरूप अंग्रेजों के हाथ चली गयी थी। सिक्ख अमलदारी उखाड़कर अंग्रेजी अमलदारी अपनी हुकूमत चलाने लगी थी। इस प्रकार भीष्म जी ने बड़ी चतुराई के साथ राजनीतिक वातावरण को दर्शाया है।

'कुंतो' उपन्यास में भी स्वतंत्रता आंदोलन द्वारा राजनीतिक वातावरण को जन्म देते हैं। आजादी के आंदोलन में सेनानियो का चित्रांकन प्राप्त होता है और इस आंदोलन में संघर्षमय पात्र सहदेव और मुनादी वाले हीरालाल प्रमुख राजनीतिक चरित्र के रूप में दिखाई देते हैं। भीष्म साहनी जी के अन्य उपन्यासों में 'कुंतो' और 'मय्यादास की माड़ी' में भी राजनीतिक वातावरण का काफी अच्छा परिवेश पनपता हुआ दिखाई देता हैं परंतु 'तमस' उपन्यास में राजनीतिक माहौल पूणरूपेण व्याप्त है और यह उपन्यास श्रेष्ठ राजनीतिक उपन्यासों की श्रेणी में रखा जा सकता है। लोग इनकी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। इनकी कोशिश नाकामयाब होती है। इस संदर्भ में कांग्रेस कमेटी वाले अंग्रेजी प्रशासन के लिए सहायता की माँग करते हैं। कांग्रेस कमेटी के बख्शी जी रिचर्ड से कहते हैं कि – "अगर शहर में पुलिस गश्त करने लगे, जगह-जगह फौज की चौकियाँ बिठा दी जाए तो दंगा-फसाद नहीं होगा, स्थिति काबू में आ जायेगी। रिचर्ड बख्शी जी के इस मशवरे पर सिर हिलाते, मुस्कराकर बोला – मैं डिप्टी कमिश्नर हूँ, फौज का इन्तजाम तो मेरे हाथ में नहीं है। यहाँ पर छावनी तो है, पर उसका यह मतलब नहीं कि फौज मेरे हुक्म से काम करती है। फिर रिचर्ड ने कहा –छावनी भी ब्रिटिश सरकार की है और हुकूमत भी ब्रिटिश सरकार की है। बख्शी जी ने रिचर्ड से कहा –अगर आप फौज बैठा दोंगे तो मामला काबू में आ जायेगा। जवाब में रिचर्ड सिर हिलाते हुए बोला कि –फौज को मैं हुक्म नहीं दे सकता, यह तो आप भी जानते ही होंगे, डिप्टी कमिश्नर को ऐसा कोई अधिकार नहीं है।"

समाज की राजनीति हमेशा वर्ग के साथ मिली होती है। आर्थिक क्षेत्र में जो शोषक वर्ग होता है। राजनीतिक क्षेत्रों में वही शासक वर्ग होता है। "कानूनी संबंधों तथा राजसत्ता के स्वरूपों को न तो उनकी प्रकृति से समझा जा सकता है और न मानव मस्तिष्क के तथा कथित सामान्य विकास से, इसके विपरित उनकी जड़े जीवन की उन भौतिक परिस्थितियों में है जिनके योग को अट्ठारहवीं शताब्दी के अंग्रेजों और फ्रांसिसियों के उदाहरण करते हुए हेगेल ने नागरिक समाज की संज्ञा दी है। ऊपर से देखने पर साम्राज्यवादी राजसत्ता समाज का सर्वाधिक शुभचिंतक लगती है। उनकी प्रवृत्ति भीतर से पूर्णत: अमानवीय हुआ करती है। उसके लिए किसी मनुष्य की उपयोगिता केवल राज्य के पुर्जे के रूप में होती है। मनुष्य से अपना स्वार्थ पूरा करने के बाद उसे यों ही असहाय और बेसहारा छोड़ दिया जाता है।" किसी गरीब कार्यक्रता की लाश को माद्यम बनाकर चुनाव की राजनीति में फतह हासिल कर लेना अमानवीय मारपीट द्वारा जनमत को अपने पक्ष में लेना, पूँजीवादी राजनीति की विशेषता है। पूँजीवादी व्यवस्था में राजसत्ता के चरित्र में भी कहीं अधिक खतरनाक चरित्र नौकरतंत्र का होता है। प्रशासक के कल पुर्जे के रूप में यह वर्ग शोषितों का शोषण कई रूपों में होता है। यह वर्ग मध्यवर्ग का होता है इसलिए एक ओर मध्यवर्गीय भय, तनाव, कुण्ठा का शिकार होता है तो दूसरी ओर निम्न वर्ग का शोषण करता है। मरम्मत के नाम पर अधिक पैसा खाने की बजाय उसे बीच से काट देता है, ताकि मरम्मत के नाम पर अधिक पैसा खाने का अवसर मिल सके। वह जानकू की पत्नी का शारीरिक शोषण भी करता है। यहीं चरित्र लोगों को रेलगाड़ी के खाली डिब्बे में भी चढ़ने से रोकता है और विरोध करने पर उसे गिरफ्तार करने की धमकी भी देता है।

संदर्भ ग्रंथ

१. चन्देल, गोरेलाल- भीष्म साहनी का साहित्य चेतना के विविध आयाम, पृ.११५
२. साहनी, भीष्म- तमस, पृ. ३२
३. साहनी, भीष्म- तमस, पृ. ७९
४. साहनी, भीष्म- मय्यादास की माड़ी, पृ. १३४